

SHRI CHEMANCHERI KUNHIRAMAN NAIR

The 101st birth day of Shri Chemancheri Kunhiraman Nair was celebrated on 26th June 2016. With his 85 years of experience as a Kathakali exponent, renowned dancer and teacher, director of more than forty ballets, founder of many reputed cultural institutions, and beloved Guru to thousands of student, he is matchless. Even in his 101st year he looks more vigorous and spirited than any youth of today.

2. Shri Nair was born in a very remote village, Cheliya of Chengottukavu Panchayathu in Koyilandy Taluk of Kozhikode district in Kerala on 26th June 1916. He lost his mother at the age of three and father at the age of thirteen. At the age of fifteen he left his house and joined a Kathakali troupe run by the great Kathakali Guru Karunakara Menon. After a rigorous training for six years he became an excellent Kathakali artist and performed in hundreds of Kathakali programmes sponsored by the various Kathakali yogams.

3. In 1945, Shri Nair stared his own school of Bharatanatyam Bharatheeya Natya Kalalayam at Kannur (first school of Bharatanatyam in North Kerala) and in 1947 a branch of it at Tellichery. Under these two institutions, he trained hundreds of students, of which several became famous dance teachers in the preceeding years. In 1949 he joined the famous 'Fairy' Circus Company and the Krishna Gopika dance choreographed by him was a great excitement for the Circus viewers of those days.

4. In 1952, Shri Nair organized the first full-fledged Ballet troupe of Malabar with a strength of 60 artists. He has choreographed about forty ballets and Nritha silpams under this troupe and has performed at a number of prestigious platforms all over South India. The Pookkad Kalalayam founded by him in 1973 has now grown to one of the leading cultural centers of Kerala with a strength of more than 1500 students. Kathakali Vidyalayam Cheliya, started by him in his own native village in 1983, is the one and only one school of Kathakali, where regular training in different branches of Kathakali is conducted under a time bound syllabus in Kathakali Vesham, Chenda, Maddalam, Sangeetham and Chutti. It also keeps a full-fledged Kathakali troupe of its own and number of Kathakali programmes are conducted every year in and outside Kerala.

5. Shri Nair has been conferred Kerala Sangeetha Nataka Academy award in 1979, Kerala Sangeetha Nataka Academy Fellowship in 1999, Kerala Kalanandalam Natyaratnam Award in 2009, Kaladarpanam Natyakulapathi Award in 2004, Mayilpeeli Award in 2006, All India Reikwi Rishi Award in 2010, Janmashtami Puraskaram in 2012, Tagore Puraskaram of Kendra Sangeetha Nataka Academy in 2012, Kalamandalam Pattikamthodi Rammuni Menon Smaraka Puraskaram in 2014, Bharatheeya Elenko Institute of Eastern Culture Chennai Puraskaram in 2015, Shanmmukhananda Trust MS Subhalakshmi Smaraka Award in 2015, Koyilandy Koottam Behrin Puraskaram & Dubai Cultural Global Meet Puraskaram in 2016 etc.

6. Shri Nair had been the chief examiner of the Natanabhooshanam degree examination of Kerala government, Board member of Kerala kalamandalam, Audition committee member of Doordarshan Trivandrum for Bharathanatyam, Kerala Sangeetha Nataka academy member and Viswakalakendram examiner, Advisory member of several reputed Cultural institution of Kerala. In his long years of untiring and dedicated service he has earned nothing else than his beloved institutions thousands of sishyas, devotees and worshippers. Whatever he has earned from his works is spent for funding his institutions and earning Kathakali costumes to preserve our rich cultural heritage. To Shri Nair, Nritha is a complete 'Sadhana' and not a means of earning, is why he remains evergreen, still performing major roles. Indeed a rare specimen - an astonishing source of energy to the coming generations.



श्री चेमनचेरि कुञ्जिरामन नायर

श्री चेमनचेरि कुञ्जिरामन नायर का 101 वां जन्मदिन 26 जून 2016 को मनाया गया। कथक्कली नृत्य विधा के प्रणेता के रूप में आपके पास 85 वर्षों की दीर्घावधि का अनुभव प्राप्त है। आप प्रसिद्ध नर्तक एवं शिक्षक, चालीस से अधिक बैले के निर्देशक, कई एक प्रख्यात सांस्कृति संस्थानों के संस्थापक एवं हजारों शिष्यों के आर्दश गुरू हैं – निश्चित रूप से आपका अद्वितीय व्यक्तित्व है। 101 वर्ष की आयु में भी आपकी कुशलता, फूर्ति आज के किसी युवक से अधिक प्रतीत होती है।

2. आपका जन्म केरल के कोजिकोड़ जिले के कोईलैंडी तालुक में चैंगोटूकाबू पंचायाथू के सुदूरवर्ती गांव चेलिया में 26 जून 1916 को हुआ। 03 वर्ष की अल्पआयु में ही आपने अपनी माता को खो दिया एवं जब आप तेरह वर्ष के थे तब पिता भी स्वर्गवासी हो गए। आपने 15 वर्ष की अल्प आयु में अपना घर छोड़ दिया तथा महान कथकली गुरू करूणकारा मेनन द्वारा संचालित कथकली नृत्य मंडली में शामिल हो गए। 6 वर्षों के कठिन परिश्रम के उपरांत आप उत्कृष्ट कथकली कलाकार बने एवं विभिन्न कथकली योगमों द्वारा प्रायोजित सेंकड़ों कथकली कार्यक्रमों में नृत्य-प्रदर्शन किया।

3. वर्ष 1945 में आपने भरतनाट्यम भारतीय नाटय कलालयम नामक अपनी नृत्य स्कूल (उत्तर केरल में प्रथम भरतनाट्यम स्कूल) की शुरूवआत कन्नोर में की एवं वर्ष 1947 में इसकी एक शाखा की स्थापना तेलीचेरी में की। इन दोनों सस्थानों के अंतर्गत आपने सैंकड़ों शिष्यों को प्रशिक्षित किया जिनमें से कई एक ने आगे चलकर प्रसिद्ध नृत्य शिक्षकों के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। वर्ष 1949 में आप सुप्रसिद्ध "फेयरी" सर्कस कंपनी में शामिल हुए एवं आपके द्वारा कोरियोग्राफ की गई कृष्ण गोपिका नृत्य सर्कस दर्शकों के बीच अत्यंत आर्कषक बनी।

4. वर्ष 1952 में 60 कलाकारों को लेकर आपने मालाबार के प्रथम पूर्णस्तरीय बैले नृत्य मंडली आयोजित की । आपने लगभग 40 बैले एवं नृत्य शिल्पमों का इस मंडली के अंतर्गत कोरियोग्राफ किया एवं संपूर्ण दक्षिण भारत में प्रतिष्ठित मंचों पर कई एक बार प्रस्तुति दी। आपके द्वारा वर्ष 1973 में संस्थापित पुक्कार कलालयम केरल के अग्रणी सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में अब विकसित हो चुका है जिसमें अब 1500 से अधिक शिष्य हैं। वर्ष 1983 में अपने गांव में आपके द्वारा शुरू किये गए कथकली विद्यालयम चेलिया कथकली का केवल एक मात्र ऐसा विद्यालय है जहां समयबद्ध पाठ्यक्रमों के तहत कथकली वेषम, चेंदा, मडयालयम, संगीतम एवं चुट्टी जैसी कथकली विभिन्न शाखाओं में नियमित प्रशिक्षण दिये जाते हैं। यह विद्यालय अपना एक पूर्णस्तरीय कथकली नृत्य मंडली भी तैयार रखता है एवं प्रत्येक वर्ष केरल के भीतर एवं इसके बाहर भी कई एक कथकली कार्यक्रमों का इसके द्वारा आयोजन किया जाता है।

5. आपको वर्ष 1979 में केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, वर्ष 1999 में संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप, वर्ष 2009 में केरल कलानंदलम नाटयरत्नम पुरस्कार, वर्ष 2004 में कला दर्पणम नाट्य कुलपति पुरस्कार, वर्ष 2006 में मईलपिली पुरस्कार, वर्ष 2010 में अखिल भारतीय रेक्कवी ऋषि पुरस्कार, वर्ष 2012 में जन्माष्टमी पुरस्कारम, वर्ष 2012 में ही केन्द्र संगीत नाटक अकादमी का टैगोर पुरस्कारम, वर्ष 2014 में कला मंडलम पट्टीकामथोड़ी राम्मुनी मेनन स्मारक पुरस्कारम, वर्ष 2015 में भारतीय एलंकों इंस्टीटयूट ऑफ स्टर्न कल्चर चैन्नई पुरस्कारम, वर्ष 2015 में ही सांम्मुखंनंदा ट्रस्ट एमएस सुब्बालक्ष्मी स्मारक पुरस्कार, वर्ष 2016 में कोईलैंडी कूट्टम बहरीन पुरस्कारम एवं दुबई कल्चरल ग्लोबल मीट पुरस्कारम आदि से सम्मानित किया गया है।

6. आप केरल सरकार की नटनभूषणम डिग्री परीक्षा के मुख्य परीक्षक, रहे हैं। केरल कला मंडलम के बोर्ड सदस्य, भरत नाट्यम के लिए दूरदर्शन त्रिवेन्द्रम के ऑडिशन समिति सदस्य, केरल संगीत नाटक अकादमी सदस्य एवं विश्वकलाकेन्द्रम परीक्षक, केरल के कई एक प्रख्यात सांस्कृतिक संस्थानों के सलाहकार सदस्य हैं। संगीत की अपनी दीर्घ एवं अथक सेवा के दौरान आपको अपने प्रिय संस्थानों के हजारों शिष्यों को शिक्षा देने का यश प्राप्त हुआ एवं इस क्रम में आपको असंख्य भक्तों एवं शिष्यों का स्नेह प्राप्त हुआ। अपने कार्यों के लिए आपको मिलने वाली राशि का उपयोग आपने अपने संस्थानों को निधि पोषित करने तथा हमारी धनी सांस्कृतिक विरासत के अनुरक्षण हेतु कथकली वेशभूषा खरीदने हेतु व्यय किया। आपके लिए नृत्य "साधना" है आय को स्रोत नहीं। यही कारण है कि आपकी ओजस्वीता अक्षुण्ण है एवं अभी भी आप महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। निस्संदेह आप एक अप्रतिम व्यक्तित्व हैं एवं भावी पीढ़ी के लिए अक्षय ऊर्जा एवं प्ररेणा के स्रोत हैं।